



4

---

---

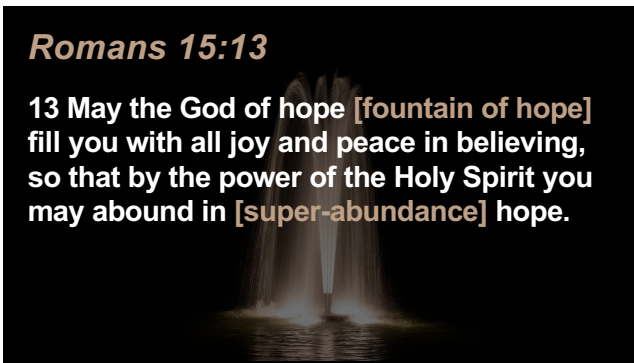
---

---

---

---

---



5

---

---

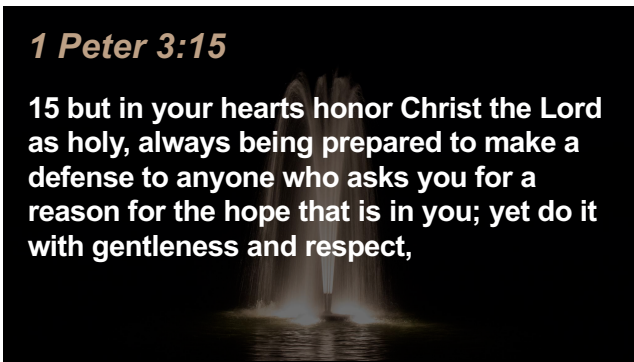
---

---

---

---

---



6

---

---

---

---

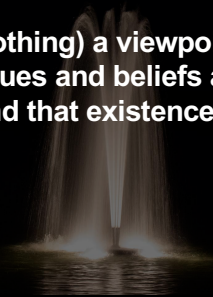
---

---

---

***Nihilism***

Latin Nihil (Nothing) a viewpoint that traditional values and beliefs are unfounded and that existence is senseless and useless.



7

---

---

---

---

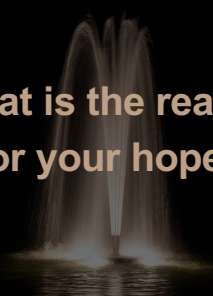
---

---

---

---

**What is the reason  
for your hope?**



8

---

---

---

---

---

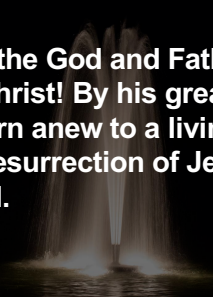
---

---

---

***1 Peter 1:3***

3 Blessed be the God and Father of our Lord Jesus Christ! By his great mercy we have been born anew to a living hope through the resurrection of Jesus Christ from the dead.



9

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Peter 1:23, 25**

**23 You have been born anew, not of perishable seed but of imperishable, through the living and abiding word of God...25 but the word of the Lord remains forever. And this word is the good news that was preached to you.**

10

---

---

---

---

---

---

---

**Regeneration**

**“new birth” or “rebirth.” To generate is to give birth to, to regenerate is to give birth to again**

**God does the work of regeneration by His Word**

11

---

---

---

---

---

---

---

**Titus 3:5 KJV**

**5 Not by works of righteousness which we have done, but according to his mercy he saved us, by the washing of regeneration, and renewing of the Holy Ghost;**

12

---

---

---

---

---

---

---

**Matthew 19:28 KJV**

28 And Jesus said unto them, Verily I say unto you, That ye which have followed me, in the regeneration when the Son of man shall sit in the throne of his glory, ye also shall sit upon twelve thrones, judging the twelve tribes of Israel.

13

---

---

---

---

---

---

---

---

**Revelation 21:5**

5 And he who was seated on the throne said, "Behold, I am making all things new." Also he said, "Write this down, for these words are trustworthy and true."

14

---

---

---

---

---

---

---

---

**1 Corinthians 2:14**

14 The natural person does not accept the things of the Spirit of God, for they are folly to him, and he is not able to understand them because they are spiritually discerned.

15

---

---

---

---

---

---

---

---

**Romans 8:7-8**

The mind of the flesh is enmity toward God, for it does not submit to the law of God, for it cannot. And those who are in the flesh can not please God.

16

---

---

---

---

---

---

---

---

**Colossians 1:21-23**

21 And you, who once were alienated and hostile in mind, doing evil deeds, 22 he has now reconciled in his body of flesh by his death, in order to present you holy and blameless and above reproach before him

17

---

---

---

---

---

---

---

---

**Colossians 1:21-23**

23 if indeed you continue in the faith, stable and steadfast, not shifting from the hope of the gospel that you heard, which has been proclaimed in all creation under heaven, and of which I, Paul, became a minister.

18

---

---

---

---

---

---

---

---



The hope of the gospel

19

---

---

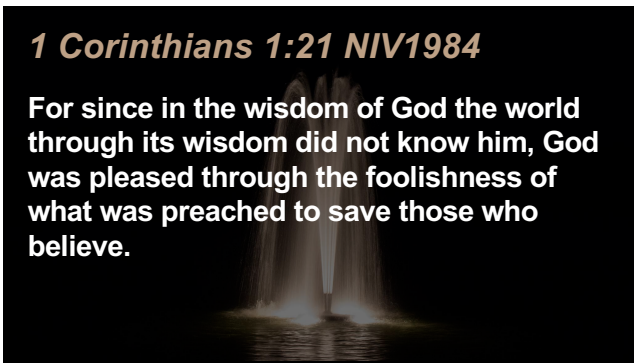
---

---

---

---

---



*1 Corinthians 1:21 NIV1984*

For since in the wisdom of God the world through its wisdom did not know him, God was pleased through the foolishness of what was preached to save those who believe.

20

---

---

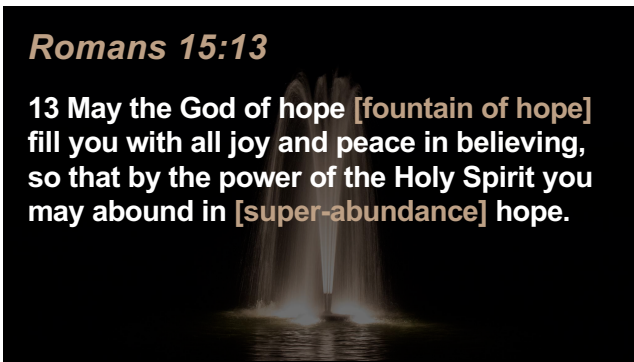
---

---

---

---

---



*Romans 15:13*

13 May the God of hope [fountain of hope] fill you with all joy and peace in believing, so that by the power of the Holy Spirit you may abound in [super-abundance] hope.

21

---

---

---

---

---

---

---



22

---

---

---

---

---

---

---